बाबू अनन्त राम जनता कॉलेज, कौल, कैथल के हिंदी- विभाग एवं ग्लोबल हिंदी-साहित्य शोध-संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 10-07-2020 दिन शुक्रवार को प्राचार्य, डॉ० बलबीर सिंह की अध्यक्षता में 'कोरोना काल में संत साहित्य की प्रासंगिकता' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। हिंदी विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम के संयोजक डॉ ऋषिपाल ने बताया कि इस अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में भारत से ही नहीं अपितु लंदन, मॉरीशस, श्रीलंका, आस्ट्रेलिया और नार्वे आदि के मूर्धन्य विद्वानों सहित लगभग एक हजार से अधिक हिंदी साहित्य-प्रेमियों , शिक्षकों, साहित्यकारों और पत्रकार-बंधुओं ने सक्रिय भाग लिया । कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती वंदना से किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम के संयोजक डॉ ऋषिपाल ने महाविद्यालय की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए महाविद्यालय के संस्थापक एवं व्यवस्थापक स्वर्गीय बाबू अनन्त राम व स्वर्गीय चौधरी ईश्वर सिंह जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए इस वेब संगोष्ठी को उनके श्री चरणों में समर्पित किया।
उद्घाटन सत्र में विद्वानों का वाचिक अभिनंदन महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ० बलबीर सिंह के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभागाध्यक्ष एवं वेबिनार के संयोजक डॉ० ऋषिपाल द्वारा किया गया। इस वेबिनार के मुख्य-अतिथि अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गीता- मनीषी परम श्रद्धेय स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज ने संत साहित्य की प्रासंगिकता को लेकर बताया कि संतों का आचरण अनुकरणीय होता है जैसा कि गीता में भी बताया गया है - यद् यद् आचरति श्रेष्ठ: तद् तदेव इतरो जना:' अर्थात श्रेष्ठ या संत लोग जैसा आचरण करते हैं वैसा ही अन्य लोग देखकर या सीखकर आचरण करने लगते हैं। श्रेष्ठ लोगों का आचरण ही समाज को गति प्रदान करता है। मुख्यवक्ता के रूप में उपस्थित डॉ० हरमोहिंदर सिंह बेदी, कुलाधिपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, ने बताया कि अगर मनोबल बढाना है तो संत-साहित्य पढ़ना परम आवश्यक है, उन्होंने कहा की आज मानव को विकास की धारा तो दिख रही है परंतु दिशा दिखाई नहीं दे रही अगर दिशा और दशा दोनों को सुधारना है तो रविदास से सीखो, नानक देव से सीखो क्योंकि हर समस्या का समाधान तो वेदों में है, गीता के ज्ञान में है और गुरु ग्रंथ साहब के सार में है । इस वेबिनार के दूसरे मुख्यवक्ता डॉ० मारकंडेय आहूजा, कुलपति, गुरुग्राम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम ने बताया कि भक्तिकाल में जितने भी संत हुए उन्होंने लोगों की सोच को बदला, जिससे समाज के लोगों का जीवन बदल गया। उन्होंने भक्तिकाल के अनेक संतों जैसे नामदेव, तुकाराम, कबीर, तुलसीदास, रविदास आदि के जीवन पर प्रकाश डाला और उनके संकल्प-शक्ति और इच्छा शक्ति से भरे उदाहरणों को प्रस्तुत किया । अपने वक्तव्य के अंत में उन्होंने इस कोरोना काल की विकट परिस्थिति में समर्पण-भाव और निष्ठा से लोगों की सहायता करने के लिए सभी को प्रेरित किया। इस कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ० ईश्वर सिंह के द्वारा प्रथम-सत्र के विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में ओस्लो नार्वे के कवि, नाटककार एवं कथाकार डॉ० सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने अपनी विशेषता के अनुरूप इस कोरोना काल की विकट परिस्थिति में संत-साहित्य की प्रासंगिकता को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए और कहा कि हमें संत-साहित्य को पढ़ना चाहिए, जिससे कि हमारा आत्मविश्वास प्रबल बने और हम किसी भी परिस्थिति में घबराए नहीं। उन्होंने 'विकास का कोरोना' नाम से एक मनभावन कविता भी सुनाई । इस कार्यक्रम के समापन सत्र के मुख्य वक्ता रहे डॉ० तेजिंदर शर्मा, एम० बी० ई०, प्रख्यात साहित्यकार लंदन, ने इस कोरोना महामारी में संत-साहित्य की प्रासंगिकता बतलाते हुए कहा कि हमें यह भी विचार करना चाहिए की इससे समाज में क्या बदलाव होगा । क्या यह हमारे जीने के ढंग को बदल देगा। ऐसे समय में हमें संयमित जीवन जीना होगा, जिससे कि हम इस संक्रमण से बच सकें । उन्होंने भक्तिकाल के सगुण और निर्गुण उपासक संतों का परिचय देते हुए भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के साथ-साथ आत्मनिर्भर बनने का भी आह्वान किया। इस वेबिनार की विशिष्ट वक्ता डॉ० पूनम के० सुजीबुन लेखक, फिल्म निर्देशक, मॉरीशस ने इस विपदा की घड़ी में सभी को आत्मबल बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया । उन्होंने कहा कि हमें एकजुट होकर इस महामारी का सामना करना पड़ेगा। कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता डॉ० कामराज सिंधू, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ने भक्ति काल के सभी संतो के जीवन और उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालते हुए इस कोरोना काल में उनकी प्रासंगिकता को बतलाया। कार्यक्रम के अंत में संयोजक डॉ० ऋषिपाल के द्वारा वेबिनार में उपस्थित हिंदी के सभी मूर्धन्य विद्वान वक्ताओं, प्राचार्यों, शिक्षकों, साहित्यकारों, शोधार्थियों/ विद्यार्थियों, हिंदी-प्रेमियों, पत्रकार बंधुओं एवं प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए प्रतिभागियों के साथ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ बलबीर

सिंह, टीचिंग एवं नॉन टीचिंग स्टाफ के सदस्यों के धन्यवाद ज्ञापन के साथ-साथ महाविद्यालय प्रबन्धक-समिति के यशस्वी प्रधान चौधरी तेजवीर सिंह एवं सम्मानित पदाधिकारियों का भी धन्यवाद किया । कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीयगान द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम की कुछ स्मृतियां इस प्रकार हैं।

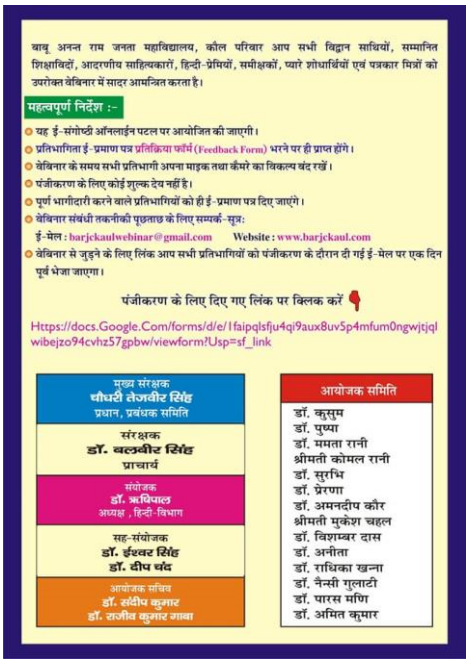

11:25 AM
You

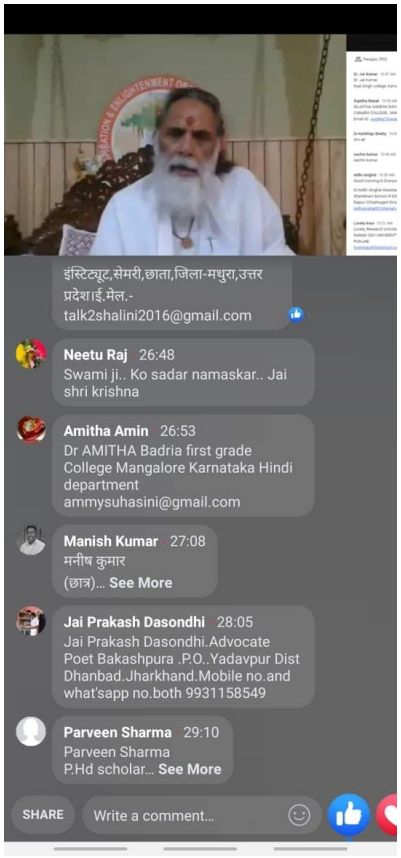
इंस्टिट्यूट,सेमरी,छाता,जिला-मथुरा,उत्तर प्रदेश।ई.मेल.-talk2shalini2016@gmail.com
Neetu Raj 26:48
Swami ji.. Ko sadar namaskar.. Jai shri krishna
Amitha Amin 26:53
Dr AMITHA Badria first grade College Mangalore Karnataka Hindi department ammysuhasini@gmail.com
Manish Kumar 27:08
मनीष कुमार
(छात्र)... See More
Jai Prakash Dasondhi 28:05
Jai Prakash Dasondhi.Advocate Poet Bakashpura .P.O..Yadavpur Dist Dhanbad.Jharkhand.Mobile no.and what'sapp no.both 9931158549
Parveen Sharma 29:10
Parveen Sharma
P.Hd scholar... See More
SHARE
Write a comment...